International Journal of New Media Studies (IJNMS), ISSN: 2394-4331
Volume 10 Issue 1, January-June, 2023, Impact Factor: 7.786

वैदिक एंव उत्तर वैदिक समन्वयः एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. राकेश कुमार

सहायक प्रोफेसर (इतिहास), जी.सी.डब्ल्यू. रोहतक

शोध सारः–

ऋग्वैदिक अध्ययन से विभिन्न नदियों, समुद्र, पूर्व मरूस्थल एवं ज्ञात क्षेत्रों का पता चलता है। इन तथ्यों के आधार पर तत्कालीन आर्यों के परिज्ञात क्षेत्र का अनुमान लगाया जा सकता है। ऋग्वेद में हिमालय पर्वत का उल्लेख हिमवत के नाम से हुआ है। इसकी एक चोटी का नाम मूजवन्त बताया गया है।, जहाँ सोम वनस्पति का वास होता है। इसके अतिरिक्त इस वेद में किसी अन्य पर्वत का उल्लेख नहीं मिलता है।

ऋग्वेद में 42 नदियों का वर्तमान में होने का उल्लेख मिलता है ; जबकि 40 नदियों के नाम भी प्राप्त हैं। नदियों में सरस्वती और सिन्धु का अनेक बार उल्लेख होता है। सरस्वती को तो नदीतमा (नदियों में श्रेष्ठ) कहा जाता है। यह नदी उस काल में समुद्र में गिरती थी। सरस्वती के साथ–साथ दृषद्वती के भी अनेक उल्लेख प्राप्त होते हैं। इसकी पहचान आज चौतांग नदी से करते हैं जो थानेश्वर (हरियाणा) के पास पूर्व में बहती है। सिन्धु इस काल की सबसे महत्वपूण नदी थी जो परावत सागर (अरब सागर) में गिरती थी।

ऋग्वेद में सागर के लिए 'समुद्र', अर्णव, एवं सिन्धु शब्द का उपयोग किया गया है। ऋग्वेद के दो छन्दों में 4 समुंद्रों का उल्लेख मिलता है। (अपर परावत्), पूर्व (अर्वावत्) सरस्वत तथा शर्याणवत्। किन्तु इनमें केवल अपर की पहचान अरब सागर से की जाती है।

समुद्र के ज्ञान का साक्ष्य ऋग्वेद के इस वर्णन से प्राप्त होता है कि सिन्धु समुद्र में गिरती थी। उपरोक्त तथ्यों से इस बात की जानकारी मिलती है कि ऋग्वैदिक लोगों को सागर की जानकारी थी। ऋग्वेद से तीन मरूस्थलों के ज्ञान की जानकारी मिलती थी। ऋग्वेद में उल्लेख मिलता है कि एक धन्व (मरूस्थल) परावत समुद्र के निकट स्थित था जबकि शेष दो की पहचान नहीं हो सकी है।

सिन्धु नदी की सहायक नदियाँः–

पूर्वी सहायक नदियाँ	पश्चिमी सहायक नदियाँ
शतुद्रि (सतलुज)	त्रिष्टामा (गिल्गिट)
परूष्णी (रावी)	सुसर्तु (धोरबन्द)
अस्कनी (चेनाब)	क्रुमु (कुरू)
मरूदृधा	गोमल (गोमती)
वितस्ता (झेलम)	सरयू (उत्तर प्रदेश में वर्तमान सरयू से भिन्न)
अर्जीकिया	ईसा
विपाश् (व्यास)	अनितभा
सुषोमा आदि	कुभा (काबूल नदी) मेहलू

क्षेत्र के रूप में गन्धार का उल्लेख ऋग्वेद में प्राप्त होता है कि गन्धार क्षेत्र उत्तम ऊन के लिए प्रसिद्ध था। ऋग्वेद में काशी तथा चेदी का भी उल्लेख होता है। उपरोक्त विवरण से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि ऋग्वेद काल में आर्यों, अफगानिस्तान, पंजाब, हरियाणा, सिन्ध, हिमाचल प्रदेश, कश्मीर, पश्चिमी उत्तर प्रदेश (सिन्धु, सरस्वती, शत्रद्रु, विपाशा, परूष्णी, अस्किन तथा वितस्ता नदी की घाटियाँ) इनका मुख्य कर्म स्थल था।

उत्तर वैदिक कालः–

उत्तर वैदिककालीन राज्य

उत्तर वैदिककालीन राज्य निम्नलिखित हैं

1. गान्धारः– सिन्धु नदी के दोनों तट पर।
2. कैकेयः– सिन्धु और व्यास के बीच में।
3. मद्रः– आधुनिक सियालकोट के पास।
4. मत्स्यः– राजस्थान में अलवर, भरतपुर, जयपुर।
5. कुशीनगरः– मध्य भारत, सिन्ध नदी के पास।
6. कुरूः– (भरत+पुरू) उत्तरी दोआब।
7. पाँचालः– बरेली, बदायूँ और फर्रूखाबाद।
8. कोशलः– सरयू नदी के किनारे।
9. काशाः– वरणवती नदी के किनारे।
10. विदेहः– सदानीरा या आधुनिक गण्डक के किनारे।

उत्तर वैदिक काल में आर्यों ने प्रसार दोआब क्षेत्र में किया जब लोहे के उपकरण बनने लगे तो गंगा–यमुना दोआब क्षेत्र को साफ करना अधिक सुगम हो गया। वैदिक सभ्यता का प्रसार जितना उत्साही राजकुमारों के प्रयास से हुआ, उतना ही पुरोहितों द्वारा अग्नि को नए प्रदेश का स्वाद चखाने का कारण हुआ।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आर्यों का सामना उन लोगों से हुआ, जो ताँबे के औजार एवं गेरूए रंग के मृद्भाण्ड (OCP) का इस्तेमाल करते थे। पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं उत्तरी बिहार में उनका ऐसे लोगों से सामना हुआ, जो ताँबे के औजार तथा काले एवं लाल मृद्भाण्डों का प्रयोग करते थे। विस्तार के दूसरे दौर में वे इसलिए सफल हुए कि उनके पास लोहे के हथियार एवं अश्चालित रथ थे।

दो प्रमुख कबीले भरत एवं पुरू एक होकर कुरू के नाम से विदित हुए। वे लोग सरस्वती एवं दृषद्वती नदियों के प्रदेश में बसे और उस समय उनकी राजधानी असन्दिवत थी। लेकिन जल्द ही कुरूओं ने दिल्ली एवं ऊपरी दोआब पर अधिकार कर लिया और यही कुरूक्षेत्र कहलाने लगा और तब इनकी राजधानी काम्पिलय हो गई। बल्हिक प्रतीपीय, परिक्षित, जनमेजय आदि इसी राजवंश के प्रमुख राजा हुए। परीक्षित का नाम अथर्ववेद में मिलता है। अथर्ववेद में परीक्षित को मृत्युलोक का देवता कहा गया है। जनमेजय के बारें में ऐसा माना जाता है कि उसने सर्पसत्र एवं दो अश्वमेघ यज्ञ किए। कुरू वंश का अन्तिम शासक निचक्षु था, उसने हस्तिनापुर से राजधानी को कौशाम्बी हस्तान्तरित कर दिया क्योंकि हस्तिनापुर एक बाढ़ में नष्ट हो चुका था। कुरूकुल से ही महाभारत का युद्ध जुड़ा हुआ है।

मध्य दोआब में क्रिवी एवं तुर्वश आर्य शाखाओं ने मिलकर पाँचाल राज्य की स्थापना की। इसके महत्त्वपूर्ण शासक प्रवाहण जैवली थे, जो विद्वानों के सरंक्षक थे। पाँचाल अपने दार्शनिक राजाओं के लिए प्रसिद्ध है। आरूणि श्वेतकेतु भी इसी क्षेत्र से जुड़े हुए हैं।

उत्तर वैदिककालीन सभ्यता का केन्द्र मध्य देश भी था। यह सरस्वती से गंगा के दोआब तक फैला हुआ था। गंगा–यमुना दोआब क्षेत्र से आर्यों का विस्तार सरयू नदी तक हुआ , जिसके किनारे कौशल राज्य की स्थापना हुई, फिर आर्यों का विस्तार वरणवती नदी के किनारे हुआ और काशी राज्य की स्थापना हुई। सदानीरा नदी के किनारे विदेह राज्य की स्थापना हुई। शतपथ ब्राह्मण से सूचना मिलती है कि विदेह माधव ने अपने गुरू राहुलगण की सहायता से अग्नि के द्वारा इस क्षेत्र का सफाया किया था।

सिन्धु नदी के दोनों तटों पर गान्धार जनपद था। गान्धार और व्यास नदी के बीच कैकेय का देश अवस्थित था। इस वंश का दार्शनिक राजा अश्वपति कैकेय था। छान्दोग्य उपनिषद् के अनुसार उसने दावा किया था कि ''मेरे राज्य में ना चोर हैं, न मद्यप, न ही क्रियाहीन और न ही व्यभिचारी तथा न ही अविद्वान।''

दक्षिण में आर्य सभ्यता से बाहर पुलिन्द (दक्षिण), सबर (मध्य प्रान्त एवं उड़ीसा), ब्रात्य (मगध), निषाद आदि निवास करते थे। तैत्तिरीय आरण्यक में क्रोन्च एवं मैनाक पर्वतों का उल्लेख मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में उत्तर वैदिक कालीन रेवा (नर्मदा नदी) और सदानीरा (गण्डक) नदी का उल्लेख मिलता है।

वैदिक काल निर्धारणः–

यद्यपि वैदिक साहित्य के सम्पूर्ण रचनाकाल के संबंध में विभिन्न मत हैं। तथापि रचनाकाल की दृष्टि से इस विपुल साहित्य को आमतौर पर दो भागों में बाँटा गया है– पूर्व वैदिक काल एवं उत्तर वैदिक काल। सामान्यतः ऋक् संहिता के रचनाकाल को पूर्व वैदिक काल तथा शेष अन्य संहिताओं एवं ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदों के रचनाकाल को उत्तर वैदिक काल माना जाता है।

निष्कर्षः–

उल्लेखनीय है कि वैदिक साहित्य में स्तरीयकरण की समस्या है अर्थात् रचना उसी क्रम में नहीं लिखी गई है जिस क्रम में उसे संकलित किया गया है। उदाहरणार्थ, ऋग्वेद के प्रथम एवं अंतिम अर्थात् दशम मण्डल को तो क्षेपक माना ही जाता है, अन्य तथाकथित परिवार खण्डों में भी अनेक सूक्त ऐसे हैं, जो परवर्ती काल के हैं। कृषि संबंधी प्रक्रिया के विवरणों से युक्त आठ ऋचाओं का 57वाँ सूक्त, जो कि चतुर्थ मण्डल में है, भाषा विज्ञान की दृष्टि से एक क्षेपक बताया गया है। जो बात संहिताओं के काल के संबंध में कही गई है, वह अन्य वैदिक ग्रंथों के लिए भी सही है। उदाहरणार्थ, ऐतरेय ब्राह्मण की सांतवी, आठवीं, और सम्भवतः छठी पंचिकाएँ मूल ग्रन्थ से अलग मानी जाती है। ऋग्वेद का रचनाकाल ईसा पूर्व लगभग 1500 से 1000 तक तथा उत्तर वैदिक काल ईसा पूर्व लगभग 1000 से 600 तक रहा होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचिः–

- अल्टेकर, ए० एस एजूकेशन इन एशियन इण्डिया।
- थापर, रोमिला भारत का इतिहास।
- दास, एस० के० दी एजूकेशनल सिस्टम ऑफ ऐशियन्ट हिन्दूज दि मित्रा प्रेस।
- पाठक पी० डी० भारतीय शिक्षा एवं उसकी समस्याएँ।
- उपेन्द्र नाथ भारतीय शिक्षा, समस्या।
- श्यामचरण दुबे मानव और संस्कृति।
- रामा अहूजा भारतीय सामाजिक व्यवस्था।